www.researchvidyapith.com ISSN (Online): 3048-7331

Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal

(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)

(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)

*** Vol-2* *Issue-8* *August 2025***

दरभंगा के किसान अंदोलन में रामनंदन मिश्र की भूमिका

बड़े लाल

यू0जी0सी0 नेट, स्नातकोत्तर–बी0एच0यू0, बनारस (उ0प्र0)

सारांश–

यह शोध पत्र रामनंदन मिश्र (1905–1989) की दरभंगा, बिहार के किसान आंदोलनों में भूमि का अध्ययन प्रस्तुत करत है। एक प्रमुख समाजवादी नेता और स्वतंत्रता सेनानी के रूप में मिश्र ने स्थानीय कृषक संघर्षों, विशेषकर बकाश्त आंदोलन को भरतीय स्वतंत्रता संग्राम से जोड़ा। उन्होंने किसानों को सामंती शोषण के विरूद्ध संगठित किया, भूमि सुधारों की मांग उठाई तथा किसान आंदोलन को समाजवादी वैचारिक दिशा प्रदान की। यह अध्ययन उनके नेतृत्व, वैचारिक योगदान तथा बिहार की सामाजिक–राजनीतिक संरचना पर उनके दीर्घकालिक प्रभाव को रेखांकित करता है।

मुख्य शब्द– रामनंदन मिश्र, दरभंगा, बकाश्त आंदोलन, बिहार किसान सभा, किसान आंदोलन, भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन, कृषक संघर्ष।

1. परिचय–

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन केवल अंग्रेजी शासन के विरूद्ध राजनीतिक संघर्ष नहीं था, बल्कि यह ग्रामीण भारत की सामाजिक और आर्थिक समस्याओं से भी गहराई से जुड़ा हुआ था। बिहार में जमींदारी व्यवस्था, अत्यधिक लगान और किसानों के शोषण ने व्यापक असंतोष उत्पन्न किया। इसी पृष्टभूमि में दरभंगा के समाजवादी नेता रामनंदन मिश्र एवं महत्वपूर्ण व्यक्त्वि के रूप में उभरे, जिन्होंने स्थानीय किसान संघर्षों को राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन से जोड़ने का कार्य किया। रामनंदन मिश्र बिहार के प्रमुख समाजवादी नेता, स्वतंत्रता सेनानी तथा किसान आंदोलन के महत्वपूर्ण संगठक थे। उनका जन्म 1905 ई0 में बिहार के दरभंगा क्षेत्र में हुआ था। वे भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के साथ–साथ किसानों और मजदूरों के अधिकारों के लिए भी सक्रिय रूप से संघर्षरत रहे। ऐसी परिस्थितियों में रामनंदन मिश्र ने किसानों को संगठित कर उनके अधिकारों की रक्षा के लिए आंदोलन चलाया। उन्होंने बकाश्त आंदोलन में सक्रिय नेतृत्व प्रदान किया तथा किसान सभा के माध्यम से किसानों में जागरूकता फैलायी। रामनंदन मिश्र कॉंग्रेस सोशलिस्ट पार्टी से जुड़े हुए थे और जयप्रकाश नारायण तथा डॉ0 राम मनोहर लोहिया जैसे समाजवादी नेताओं के निकट सहयोगी थी। उन्होंने किसान आंदोलन को केवल आर्थिक संघर्ष न मानकर सामाजिक न्याय और समानता का आंदोलन माना। उनके प्रयासों से दरभंगा क्षेत्र में किसान चेतना का विकास हुआ और किसानों को अपने अधिकारों के लिए संगठित संघर्ष की प्रेरणा मिली। इस प्रकार रामनंदन मिश्र दरभंगा के किसान आंदोलन के ऐसे नेता थे जिन्होंने किसानों की समस्याओं को राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन से जोड़ते हुए सामाजिक परिवर्तन की दीशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

2. बिहार में किसान आंदोलन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि–

बिहार की जमींदारी व्यवस्था किसानों पर अत्यधिक लगान, बेगार तथा बकाश्त भूमि व्यवस्था जैसे दमनकारी नियम थोपती थी। इन परिस्थितियों ने किसानों में असंतोष पैदा किया और 1929 में स्वामी सहजानंद सरस्वती के नेतृत्व में बिहार प्रांतीय किसान सभा का गठन हुआ, जो बाद में अखिल भारतीय किसान सभा (1936) में जुड़ गई।

दरभंगा राज की विशाल जमींदारी के कारण यह क्षेत्र कृषक आंदोलनों का प्रमुख केद्र बन गया। यहाँ किसानों और जमींदारों के बीच भूमि अधिकारों को लेकर लगातार संघर्ष चलता रहा।

3. रामनंदन मिश्र की भूमिका–

3.1 बकाश्त आंदोलन में नेतृत्व

दरभंगा का बकाश्त आंदोल (1937–39) किसानों द्वारा अपनी जमीन के अधिकारों की रक्षा के लिए चलाया गया संघर्ष

था। जमींदार किसानों की भूमि पुनः अपने कब्जे में लेना चाहते थे। कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी (ब्ब्) के नेता के रूप में रामनंदन मिश्र ने आंदोलन को संकठनात्मक समर्थन दिया तथा किसानों को सामूहिक एकता और प्रतिरोध के लिए प्रेषित किया।

3.2 दरभंगा के किसानो से गाँधी जी का संबंध

महात्मा गाँधी का मिथिलांचल के लोगों से बड़ा ही गहरा लगाव था, गाँधी ने 1917 के बाद दर्जनों बार मिथिलांचन की यात्रा की थी, 1927–28 में गाँधी के सहयोग से दरभंगा में पर्दा विरोधी आंदोलन प्रारंभ हुआ खादी कार्यकर्ता रामनंदन मिश्र इसके अगुआ थे वे पत्नी राजकिशोरी देवी को इस पर्दा प्रथा से बाहर करना चाहते थे गाँधी ने उनके मदद के लिए अपने भाई के पुत्र मगनलाल गाँधी की पुत्री राधा बहन और दलबहादुर गिरि की पुत्री दुर्गा देवी को दरभंगा भेजा था शोध पत्रिका मिथिला भारतीय में इसकी चर्चा की है। इसके पहले गाँधी जी, 11 अक्टूबर 1925 को गाँधी सुबह नौ बजे किशनगंज से ट्रेन द्वारा अररिया पहुंचे महिलाओं की सभा को संबोधित किया, 13 अक्टूबर को पूर्णिया के विष्णुपुर गांव का भ्रमण किया गांधी जी 14 अक्टूबर को पूर्णिया आये, यहाँ दरभंगा हाउस मैदान में एक विशाल जनसभा को संबोधित किया 18 जनवरी 1927 को वे मुजफ्फरपुर के मैरवा आये यहां 30 हजार से अधिक लोग जुटे थे 24 जनवरी 1927 को वे सकरी, पंडौल, मधुबनी, बेल्हवार, कपसिया, बैरगिनिया, सीतामढ़ी, शिवहर, घोड़ासहन, ढ़ाका, नरकटियागंज, बेतिया, मोतिहारी होते 25 जनवरी की सुबह मुजफ्फरपुर पहुंचे 26 जनवरी को वे बेगूसराय, खगड़िया और गोगरी का भ्रमण किया 1934 के प्रस्द्धि भूकंप के बाद भी गांधी ने लगातार मिथिलांचल की यात्रा की भूकंप के बाद गांधी जी दरभंगा आये, जहां इनकी अगवानी में दरभंगा महाराज के छोटे भाई कुमार साहेब और यूरोपियन मैनेजर डेनवी मौजूद थे, यूरोपियन गेस्ट हाउस में महाराज दरभंगा और कुछ प्रसिद्ध लोगों ने उनका स्वागत किया यहाँ उन्होंने आत्मशुद्धता एवं सामाजिक संधार के लिए छूआ–छूत का परित्याग करने की अपील की, 31 मार्च को गांधी जी दरभंगा से दोपहर करीब 12 बजे मधुबनी आये, चरखा संघ के कामकाज को देखने के बाद वहां से राजनगर आये भूकंप के कारण यहां के भव्य भवन ध्वंसावशेष देख गांधजी जी अत्यंत पीड़ित हुए इसी क्रम में मधुबनी से मोटरगाड़ी से गाँधी जी निर्मली आये, रास्ते मे सहरसा और सुपौल में भी उन्होंने पीड़ितों से मुलाकात की इसके बाद वे बिहपुर गये और विषेष स्टीमर से गंगा नदी पार कर भागलपुर आये, 8 अप्रैल 1934 को वे राजेन्द्र प्रसाद के साथ कटिहार आये, वहां से फारबिसगंज जाकर हजारो लोगों की जनसभा को संबोधित किया और हरिजन पत्रिका के लिए लोगों से चर्चा की शाम में गाँधी अररिया पहुंचे।

शोध पद्धति–

प्रस्तुत शोध दरभंगा के किसान आंदोलन में रामनंदन मिश्र की भूमिका विषय पर आधारित है। इस अध्ययन में ऐतिहासिक एवं विश्लेषणात्मक शोध पद्धति का प्रयोग किया गया है। शोध का उद्देश्य दरभंगा क्षेत्र के किसान आंदोलनों में रामनंदन मिश्र के योगदान उनकी विचारधारा तथा किसान संघर्षों पर उनके प्रभाव का अध्ययन करना है।

इस शोध में गुणात्मक (फनंसपजंजपअम) पद्धति को अपनाया गया है। अध्ययन के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के स्त्रोतों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक स्त्रोतों में रामनंदन मिश्र के भाषण, लेख, पत्राचार, समकालीन समाचार पत्र तथा किसान सभा से संबंधित दस्तावेज शामिल किए गए है। वहीं द्वितीयक स्त्रोतों के अन्तर्गत इतिहासकारों की पुस्तकें, शोध पत्र, जर्नल, शोध प्रबंध तथा ऑनलाईन शोध सामग्री का उपयोग किया गया है। शोध के दौरान दरभंगा के किसान आंदोलनों, विशेषकर बकाश्त आंदोलन का ऐतिहासिक संदर्भ में विश्लेषण किया गा है। साथ ही बिहार किसान सभा, कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी तथा स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े विभिन्न दस्तावेजों का अध्ययन कर रामनंदन मिश्र की भूमि को समझने का प्रयास किया गया है। अध्ययन में तुलनात्मक एवं व्याख्यात्मक पद्धति का भी प्रयोग किया गया है, जिससे बिहार के किसान आंदोलनों की तुलना भारत के अन्य किसान आंदोलन से की जा सके। इस शोध का आधार तथ्यात्मक सामग्री, ऐतिहासिक घटनाएँ तथा समाजवादी विचारधारा से संबंधित दस्तावेज रहे है।

अतः यह शोध ऐतिहासिक तथ्यों, दस्तावेजों तथा विश्लेषणात्मक अध्ययन पर आधारित एक गुणात्मक शोध है, जो दरभंगा के किसान आंदोलन में रामनंदन मिश्र के योगदान को समझने का प्रयास करता है।

4. प्रभाव और परिणाम

रामनंदन मिश्र के नेतृत्व में दरभंगा के किसान आंदोलनों ने सामंती शोषण के विरूद्ध व्यापक जनजागरण पैदा किया। इन आंदोलनों के दबाव के कारण भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को अपने कार्यक्रमों में कृषक मुद्दो को शामिल करना पड़ा। स्वतंत्रता के बाद भूमि सुधार और जमींदारी उन्मूलन की मांगों पर भी इन किसान आंदोलनों का गहरा प्रभाव पड़ा। इससे बिहार की सामाजिक राजनीतिक संरचना में महत्वपूर्ण परिवर्तन आए।

5. समकालीन प्रासंगिकता

रामनंदन मिश्र और दरभंगा किसान आंदोलन का महत्व केवल स्वतंत्रता आंदोलन तक सीमित नहीं है। आज भी न्यूनतम समर्थन मूलय (डैच्) भूमि अधिकार, किसान ऋण और कृषि असमानता जैसे मुद्दे भारतीय रानीतिक के केन्द्र में है।

मिश्र की यह सोच की स्वतंत्रता का अर्थ सामाजिक और आर्थिक न्याय से जुड़ा होना चाहिए, आज भी प्रासंगिक

है। बकाश्त आंदोलन सामूहिक संघर्ष और किसान एकता का प्रतीक माना जाता है।

6. तुलनात्मक दृष्टिकोण

दरभंगा का किसान आंदोलन भारत के अन्य कृषक आंदोलनों जैसे बंगाल के तेभागा आंदोलन (1946) आंध्र प्रदेश के तेलंगाना आंदोलन (1946–51) और पंजाब के किसान संघर्षों से कई समानताएं रखता था। हालाँकि दरभंगा आंदोलन की विशेषता यह थी कि यह सीधे दरभंगा राज की सामंती नीतियों के विरूद्ध केंद्रित था तथा समाजवादी नेताओं के वैचारिक प्रभाव से संचालित था। यह आंदोलन भारतीय किसान आंदोलनों के व्यापक स्वरूप को समझने में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

7. निष्कर्ष–

दरभंगा के किसान आंदोलन में रामनंदन मिश्र की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रेरणादायक रही। उन्होंने किसानों की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक समस्याओं को समझते हुए उन्हें संगठित संघर्ष की दिशा प्रदान की। बकाश्त आंदोलन तथा किसान सभा के माध्यम से उन्होंने जमींदारी शोषण, अत्यधिक लगान और किसानों के अधिकारों के प्रश्न को राष्ट्रीय स्तर तक पहुँचाने का प्रयास किया। रामनंदन मिश्र केवल एक राजनीतिक नेता नहीं थे, बल्कि वे समाजवादी विचारधारा से प्रेरित ऐसे जननेता थे जिन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन को किसानों और मजदूरों के संघर्षों से जोड़ा। उनके नेतृत्व ने दरभंगा क्षेत्र में किसान चेतना को मजबूत किया तथा किसानों में अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता उत्पन्न की। यद्यपि उनके आंदोलनों को कई चुनौतियों और आलोचनाओं का सामना करना पड़ा, फिर भी उनके योगदान बिहार के किसान आंदोलनों और समाजवादी राजनीति के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। उनके प्रयासों ने स्वतंत्रता के बाद भूमि सुधार और सामाजिक न्याय की नीतियों को भी प्रभावित किया।

अतः यह कहा जा सकता है कि रामनंदन मिश्र का व्यक्तित्व और कार्य भारतीय किसान आंदोलनों के इतिहास में एक महत्वपूर्ण अध्याय है। उन्होंने किसानों के अधिकार, समानता और सामाजिक न्याय के लिए जो संघर्ष किया वह आज भी प्रेरणा का स्त्रोत बना हुआ है।

Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

संदर्भ सूची–

1. दास, ए0एन0 (1982) बिहार में किसान सभा और किसान आंदोलन, राउटलिज प्रकाशन।
2. मिश्र, रामनंदन (1950) रामनंदन मिश्र के भाषण एवं लेख संग्रह, पटना बिहार सोशलिस्ट प्रेस।
3. सिंह, के0के0 (2005) बिहार का किसान आंदोलन और समाजवादी राजनीति नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।
4. सहजानंद सरस्वती (1940) किसान सभा के संस्मरण पटना प्रकाशन।
5. कुमार दीपक (2012) दरभंगा राज और किसान संघर्ष पटना बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी।
6. मिश्र रामनंदन (पत्रिका) मैं और गांधी जी
7. डॉ0 के0के0 दत्त बिहार में किसान आंदोलन बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी
8. बिहार प्रांतीय किसान सभा (1929–42)

Cite this Article-

'बड़े लाल', "दरभंगा के किसान अंदोलन में रामनंदन मिश्र की भूमिका', Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal (RVIMJ), ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:2, Issue:08, August 2025.

DOI- 10.70650/rvimj.2025v2i800024

Published Date- 12 August 2025